www.thearyasamaj.org

Date of Publication: 25 October 2013

कमल ज्योति

(मासिक पत्र)

वर्ष-7, अंक-8 नवम्बर 2013 विक्रमी संवत् 2070 सृष्टि संवत् 1960853113 एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये आजीवन शुल्क 1100/-रुपये

ओ३म्

संस्थापक

भजनप्रकाश आर्य

संरक्षक

ओमप्रकाश हसीजा

प्रधान सम्पादक

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
चलभाष : 9810084806

सम्पादक

एल.आर. आहूजा
आचार्य शिव नारायण शास्त्री
अतुल आर्य
चलभाष : 9718194653
दूरभाष : 011-27017780

सहयोगी सम्पादक

प्रिंसीपल हर्ष आर्या
चलभाष : 9999114012
राजीव आर्य
चलभाष : 9212209044
नरेन्द्र आर्य 'सुमन'
चलभाष : 9213402628

निष्काम कर्मयोग की महती महिमा

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँ समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

- यजुः 40.12

ऋषिः-**दीर्घतमाः**॥ देवता-**आत्मा**॥ छन्दः-**भुरिगनुष्टुप**

शब्दार्थ- मनुष्य **इह**=इस संसार में **कर्माणि**=कर्मों को **कुर्वन्**=करता हुआ **एव**=ही **शतं समाः**=सौ वर्ष तक **जिजीविषेत्**=जीता रहना चाहे। **एवम्**=इस तरह, पूर्वोक्त प्रकार से त्यागपूर्व कर्म करने से **त्वयि**=तुझ **नरे**=नर में **कर्म**=कर्म **न लिप्यते**=लिप्त नहीं होगा। **इतः अन्यथा**=इसके अतिरिक्त (कर्मलेप से बचने का) और कोई उपाय **न अस्ति**=नहीं है।

विनय- मनुष्य को चाहिए कि वह कर्म करता हुआ ही जीना चाहे। यदि वह कर्म नहीं करता है तो उसे जीवित रहने का अधिकार नहीं है। यह जीवन कर्म करने के लिए ही दिया गया है। हे मनुष्य! क्या तू डरता है कि कर्म करने से तू कर्म में लिप्त हो जाएगा, बँध जाएगा? नहीं, यदि तू पूर्वोक्त प्रकार से त्यागपूर्वक जगत् को भोगेगा, ईशार्पण बुद्धि से अपने सब व्यवहार करेगा, सर्वथा 'मम'-'अहं' को छोड़कर कर्म करेगा तो तेरे ऐसे कर्म कभी तुझे बन्धनकारक नहीं होंगे। ऐसे निष्काम कर्मो का कभी तुझ 'नर' में लेप नहीं होगा। सचमुच ऐसे निष्काम कर्म करनेवाले ही संसार में असली नर होते हैं, व्यवहार को चलानेवाले होते हैं, नेता होते हैं, अतः हे नर! तू अनासक्त होकर त्यागपूर्वक कर्मो को कर। यही कर्मलेप से बचने का उपाय है, बलिक इस निष्काम कर्म की साधना के सिवाय संसार में और कोई उपाय कर्मलेप से बचने का नहीं है। क्या तू समझता है कि कर्म न करने से तू कर्मलेप से बच जाएगा? अरे भोले! जब तक यह शरीर है, जीवन है, तबतक कर्मत्याग हो ही कैसे सकता है? कुछ-न-कुछ शारीरिक या मानसिक कर्म किए बिना तू जी ही कैसे सकता है? यदि कर्म से बचने के लिए तू आत्मघात भी कर डालेगा, तो भी तुझे छुटकारा नहीं मिलेगा। तुझे दूसरा जन्म लेना पड़ेगा और तुझे इस आत्मघात का पाप भी लगेगा। तू देख कि जिस समय कर्म करना आवश्यक हो उस समय कर्म न करने से अकर्म का पाप भी लगता है, अतः याद रख कि कर्म त्यागने से तो तुझे कभी निर्लेपता नहीं मिलेगी। इसका साधन तो एक ही है कि कर्म किया जाए, किन्तु निर्लेप होकर किया जाए, अतः हे मनुष्य! तू उठ और इस अकर्म की तामसिक अवस्था को त्यागकर उत्साहपूर्वक निर्लेप कर्मो को किया कर, सर्वथा निरहंकार होकर, सदा प्रभु-अर्पित अवस्था में रहते हुए सहजप्राप्त कर्मो को निःसङ्ग होकर सदा किया कर। ऐसे कर्मों को तू अपने सम्पूर्ण सौ वर्ष तक करता जा, अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक करता जा।

www.thearyasamaj.org

गतांक से आगे

सामवेद संहिता

–श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा

ज्योतिर्यज्ञस्य पवते मधु प्रियं पिता देवानां जनिता विभूवसुः।
दधाति रत्नं स्वधयोरपीच्यं मदिन्तमो मत्सर इन्द्रियो रसः॥
अभिक्रन्दन कलशं वाज्यर्षति पतिदवः शतधारो विचक्षणः।
हरिमित्रस्य सदनेषु सीदति मर्मृ जानोऽविभिः सिन्धुभिर्वृषा॥
अग्रे सिन्धनां पवमानो अर्षस्यग्रे वाचो अग्रियो गोषु गच्छसि।
अग्रे वाजस्य भजसे महद् धनं स्वायुधः सोतृभिः सोम सूयसे॥775॥

देख लो पथप्रदर्शक, सोम का अमृत भरे।
दिव्य गुण ऐश्वर्य दाता, इन्द्र का वह हित करे॥
जीवन यज्ञ कराने वाला, रक्षक व्यापाक सोम है।
पीयूषधारा आनन्द की, निशदिन बहाता ओम है॥
शोर मचाता राह दिखाता, शतधारा बरसाता आ रहा।
ज्ञानजल से शुद्ध बनकर, भक्त मन इन्द्रियों पर छा रहा।
हे सोम नेता तू बना ज्ञान, वाणी इन्द्रियों चला रहा।
वीर इन्द्र के सम्पत्तिदाता, साधक तुझ को पा रहा।

असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया।
शुक्रासो वीरयाशवः॥
शुम्भमाना ऋतायुभिर्मज्यमाना गभस्त्योः। पवन्ते वारे अव्यये॥
ते विश्वा दाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा।
पवन्तामान्तरिक्ष्या॥776॥

बलशाली शुद्ध परमानन्द, विजय दिलवाता है।
ज्ञान-प्रभा चमका कर, शक्ति को तीव्र बनाता है॥
परम सत्य को भक्त जो चाहे, वही उस को पाता है।
ज्ञान-रश्मि से शुद्ध बना, चेतनता में से आता है॥

पवस्व देववीरति पवित्रं सोम रंह्या। इन्द्रमिन्दो वृषा विश॥
आ वच्यस्व महि प्सरो वृषेन्दो द्युम्नवत्तमः।
आ योनिं धर्णसिः सदः॥
अधुक्षत प्रियं मधु धारा सुतस्य वेधसः। अपो वसिष्ट सुक्रतुः॥
महान्तं त्वा महीरन्वापो अर्षन्ति सिन्धवः। यद्गोभिर्वासयिष्यते॥
समुद्रो अप्सु मामृजे विष्टम्भो धरूणो दिवः।
सोमः पवित्रे अस्मयुः॥
अचिक्रदद्वृषा हरिर्महान्मित्रो न दर्शतः। सं सूर्येण दिद्युते॥
गिरस्त इन्द ओजसा मर्मृज्यन्ते अपस्युवः। याभिर्मदाय शुम्भसे॥
तं त्वा मदाय घृष्वय उ लोककृत्तुमीमहे। तव प्रशस्तये महे॥
गोषा इन्दो नृषा अस्यश्वसा वाजसा उत। आत्मा यज्ञस्य पूर्व्यः॥
अस्मभ्यमिन्दविन्द्रियं मधोः पवस्व धारया।
पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव॥777॥

दिव्य गुणों के धारणाकर्ता, पावन सोम आता जा।
हृदय में आकर आनंददाता, इन्द्र के तन में छाता जा॥
हे यश वाले आनन्ददाता, तू ही सूख बरसाता है।
मेरे मन में जम के बैठ, ज्ञान तू ही दर्शाता है॥
योग साधनों से मिलता, सोम अमृत का दाता है।
जिस को मिलता सोम सदा, वह शुभ कर्म कमाता है॥
ज्ञान-रश्मि पर्दो के पीछे, कर्म भावना आती है।
ज्ञान-साधना साधक के, मन पर अधिकार जमाती है॥
परमानन्द देने वाला जो, प्रकाश सब का है सहारा।
कर्मभावना शुद्ध बनाता, मनमन्दिर में उसको धारा॥
प्यारा सुन्दर मित्र सोम, जब सुख बरसाने आता।
प्रेरक शक्ति देकर जग को, जगमग करके जाता॥
हे आह्लादक तेरे बल से, ज्ञान कर्म पति गीत मेरे।
शुद्ध हो या तुझ को गाते, आनन्द पाते मीत मेरे॥
हम चाहते उसी सोम को, सब विघ्नों को पार करे।
परमानन्द पा तेरे गीत सुनावें, तुझ से प्यार करे।
हे आह्लादक सोम तू, ज्ञान कर्म उन्नति का दाता।
सदा सदा से यज्ञ भावना, कर्मों में है तू लाता॥
खूब बरसने वाला बादल, जैसे जल बरसाता।
अमृत की धारा बन आ, तू ही इन्द्र का त्राता॥

सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः।
अथा नो वस्यसस्कृधि॥
सना ज्योतिः सना स्व३विश्वा च सोम सौभगा।
अथा नो वस्यसस्कृधि॥
सना दक्षमुत क्रतुमप सोम मृधो जहि। अथा नो वस्यसस्कृधि॥
पवीतारः पुनीतन सोममिन्द्राय पातवे। अथा नो वस्यसस्कृधि॥
त्वं सूर्य न आ भज तव अत्वा तवोतिभिः।
अथा नो वस्यसस्कृधि॥
तव क्रत्वा तवोतिभिर्ज्योक् पश्येम सूर्यम्। अथा नो वस्यसस्कृधि॥
अभ्यूर्ष स्वायुध सोम द्विबर्हसं रयिम। अथा नो वस्यसस्कृधि॥
अभ्य३र्षानपच्युतो वाजिन्त्समत्सु सासहिः।
अथा नो वस्यसस्कृधि॥
त्वां यज्ञैरवीवृधन् पवमान विधर्मणि। अथा नो वस्यसस्कृधि॥
रयिं नश्चित्रमश्विनमिन्दो विश्वायुमा भर।
अथा नो वस्यसस्कृधि॥778॥

हे पवमान महान ज्ञान से, सब बाधाएं दूर भागा।
सुख से रहने वालों में, सबस से श्रेष्ठ तू हमें बना॥
हे सोम ज्ञान की ज्योति देकर, परम सुख प्रदान कर।
पूर्ण सौभाग्य बरसा कर, सुखियों में ऐश्वर्यवान कर॥
हे साम ज्ञान कर्मबल से, रिपुत्रों को तू दूर कर।
बाधा रहित सुख को देकर, अमृत से भरपूर कर॥
साधक जन नित सोम बनावें, इन्द्र ही उसका पान करे।
यही बनाया सोम मधुर ही, जीवन में सुख दान करे॥
हे साम कर्म और रक्षण बल से, तेरी प्रेरणा हम पावें।
कर्म करें और श्रेष्ठ बनें, प्यारे प्रभु के भक्त कहावें॥
हे सोम तेरी कर्म शक्ति, ज्ञान-प्रकाश का रूप दिखाये।
उससे जीवन-दर्शन पा, अपना जीवन श्रेष्ठ बनायें॥

[क्रमशः]

www.thearyasamaj.org

गतांक से आगे

जीवन-मृत्यु का चिन्तन

-डॉ. महेश विद्यालंकार

वाणी में मधुरता और व्यवहार में विनम्रता आ जाये तो जीवन आसान हो जाता है। सुखी जीवन के लिए कहीं कहो, कहीं सहो और कही शान्त रहो, तभी जीवन चलता है। आदतों के गुलाम मत बनो। जो इनका गुलाम बन जाता है, वह दु:खी व परेशान रहता है। सोच को बदलने से जीवन बदल जाता है। नई दुनिया नहीं मिलनी है, जो मिली है, उसी में रहना व जीना है। उसी को अच्छा बनाकर जीना सुखी जीवन की कला है। परिवारिजनों को वृद्धों का सम्मान, सहयोग और उनकी सेवा का पूरा ध्यान रखना चाहिए। बुजुर्गो को सम्मान सबसे अधिक प्रिय होता है। सम्मान मिल जाये, तो वे राजी हो जाते हैं। असम्मान व उपेक्षा से वे अन्दर ही अन्दर टूटने लगते हैं। वृद्धावस्था में उन्हें शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और भावनात्मक सहायता की जरूरत होती है। वृद्धजन वृक्ष की छाया के समान होते हैं। वे छाया और फल भी देते हैं। वृद्धों का सम्मान भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण विशेषता है। यही सच्चा श्राद्ध हैं।

जन्म के साथ-साथ मरण भी चल रहा है। इसे भी देख जाना चाहिए। जीवन थोड़ा है, और विघ्न-बाधाएँ, समस्याएं अनेक हैं। जो महत्वूपर्ण व सारभूत है, उसे पकड़ लो, बाकी के छोड़ने में ही समझदारी है। इससे मन सुधरता है और सांसारिक आसक्ति भी छूटती है। भोगों से त्याग की ओर चलना ही सुखी जीवन का आधार है।

ईश्वर के ज्ञान के बिना मानवजीवन व्यर्थ है। ईश्वर के सान्निध्य से ही जीवन में पवित्रता आती है। मृत्यु हमारे सिर पर सवार है। परमात्मा, जिसने हमें दुनिया में भेजा और जो निरन्तर संभाल रहा है, उसे और मृत्यु को याद रखने से जीवन पाप, अधर्म तथा बुराइयों से बचा रहता है। जो जीवन को ज्ञानपूर्वक, होश में और परमात्मा को साक्षी बनाकर जीते हैं, उनका जीवन सुख, शान्ति, प्रसन्नता एवं आनन्द में गुजरता है। ऐसे लोग हर हाल में अपने को राजी रखते हैं। सुखी जीवन की कला को समझो और पकड़ो। जीवन को स्वर्ग बनाकर जियो।

जीवन-चिन्तन

जीवन एक ऐसी खुली किताब है, जिसके आदि और अन्त के पृष्ठ गायब हैं। मनुष्य को पता ही नहीं है, कि जीवन किसे कहते हैं? इसे कैसे आरम्भ करना, कैसे जीना, और कैसे अन्त करना चाहिए? सारा जीवन हम परमात्मा और अपने से अपरिचित बने रहते हैं और अपने को जान और पहिचान ही नहीं पाते हैं। सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय पानी के प्रवाह की तरह कब बह गया, कहाँ गया, कोई सुध नहीं रहती है। अधिकांश लोगों का बचपन खेल में, जवानी भोगों में और बुढ़ापा रोगों में निकलता है।

पुनर्जन्म, कर्मवाद, आस्तिकता, भोग-त्याग का समन्वय, मोक्ष की कामना आदि भारतीय जीवनदर्शन की विशेषताएँ हैं। सभी धर्मग्रन्थ, महापुरुष और ज्ञानी पुकार-पुकार कर कह रहे हैं।-पूर्वजन्म था, वर्तमान जीवन हम जी रहे हैं और अगला जन्म होगा।'' इसी जन्म में ही अगले जन्म का चिन्तन करना है। इसी जीवन से अगला जन्म सुधरेगा। वर्तमान से ही भविष्य बनता है।

किसी गुरु के दो शिष्य थे। एक ने गुरु से प्रश्न पूछा-''क्या आप पिछले जीवन के बारे में बता सकते हैं?'' गुरु ने कहा-''हाँ, बता सकता हूँ।'' दूसरे शिष्य ने पूछा-''क्या आप अगले जीवन के बारे में बता सकते हैं।'' गुरु ने कहा-''मैं भविष्य के बारे में भी बता सकता हूँ।'' उन्होंने दोनों शिष्यों को समझाया-''पिछले जीवन के आधार पर तो यह जीवन मिला है। यदि पिछले जीवन में धर्म व पुण्य न किए होते, तो वर्तमान इतना सुन्दर सुखी तथा सुब साधनों से सम्पन्न जीवन कैसे मिलता? इससे सिद्ध है कि पिछला जीवन सुन्दर श्रेष्ठ एवं पवित्र था। वर्तमान जीवन, बुराइयों, दोषों, पाप, अधर्म आदि से बचा हुआ है, तो निश्चित ही अगले जन्म में अच्छी योनि प्राप्त होगी। असंख्य जीव नाना योनियों में जो कर्मफल भोग रहे हैं, वह पुनर्जन्म का सबसे बड़ा प्रमाण है। पूर्वजन्म के कर्मफल के कारण असंख्य जीवन नरक भोग रहे हैं। धर्म-कर्म, दान-पुण्य, पूजापाठ आदि वर्तमान और अगले जन्म को सुधारने के लिए ही किए जाते हैं। पुनर्जन्म की भावना पर विश्वास करते हुए हमें वर्तमान जीवन को सँभालना, सुधारना और ऊँचा उठाना चाहिए। इसी में जीवन की सार्थकता, सुन्दरता व उपयोगिता है। जो प्राप्त जीवन को दुर्गुणों, दुर्व्यसनों तथा गलत कामों में गुजारते हैं, वे अगले जन्मों में निकृष्ट योनियों को प्राप्त करके जन्म-जन्मान्तरों तक दु:ख, कष्ट, अभाव आदि में रहते हैं। अत: पुनर्जन्म हमें सँभलने व सुधरने का अवसर देता है।

श्रेष्ठकर्म करते हुए जीने की इच्छा करना भारतीय जीवनदर्शन है। वेद का भी उपदेश है-'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत्' हे मनुष्यों! पुरुषार्थी और कर्मशील बनो। कर्मो से मनुष्य देवता बनता है, कर्मों से ही आदमी राक्षस बन जाता है। यह संसार

www.thearyasamaj.org

कर्म की खेती है। जो जैसा बोता है, वैसा काटता है। जैसा बीज, वैसा फल। जैसी करनी वैसी भरनी। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र, परन्तु फल भोगने में परतन्त्र है। जीव अपने कर्मानुसार जगत् में आता है और उसी के अनुसार फल भोग कर चला जाता है। जो इन्सान कर्म करता है, उसी के आधार पर जाति, आयु तथा भोग प्राप्त होते हैं।

जो संसार में नानात्व तथा वैविध्य नजर आता है, उसके मूल में जीव के कर्म ही हैं। एक समय दो बालक जन्म लेते हैं-एक राजमहल में और दूसरा झोपड़ी में। कोई बुद्धिमान्, तो कोई बुद्धिहीन है। कोई साधनहीन, तो कोई सभी साधनों से सम्पन्न है। कोई जन्म से ही सुखी है तो कोई जन्म से दुःख, कष्ट व पीड़ा उठा रहा है। सूरदास की ये पंक्तियाँ बड़ी शिक्षाप्रद हैं-

1. ऊधो! करमन की गति न्यारी।

2. कर्म गति टारे नहीं टरे॥

संसार में अनन्त भोगयोनियों का जाल बिछा है। नाली में पड़ा हुआ कीड़ा पूर्वजन्म के कर्मफल भोग रहा है। संसार के प्राणी कर्मफल के भोग के प्रेरक उदाहरण हैं। गीता कहती है-**'कर्मणां गहना गतिः'**-कर्मफल का रहस्य बड़ा गहन तथा विचित्र है, बड़े-बड़े ऋषि-मुनि-ज्ञानी भी इस रहस्य को नहीं समझ सके हैं। भगवान् श्रीकृष्ण का अमर संदेश है-**'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'**-जो कर्म मैंने किये हैं या कर रहा हूँ, उनका अच्छा-बुरा फल मुझको ही प्राप्त होगा। प्रभु की इस अटल न्याय-व्यवस्था में कोई पक्षपात तथा सिफारिश नहीं है। व्यक्ति अपने ही बुरे कर्मो से नरक भोगता हैं। कोई किसी को स्वर्ग या नरक नहीं देता है। व्यक्ति अपने कर्म से ही उठता तथा अपने कर्म से ही नीचे गिरता है। प्रभु की अदालत में कोई वकील, दलील और अपील नहीं चलती है। उसकी मार में आवाज नहीं होती है। प्रेरक कथन हमें सचेत कर रहा है-

कण-कण में वसा प्रभु देख रहा है।
चाहे पाप करो, चाहे पुण्य करो॥
कोई उसकी नजर से बच न सका।

सच्चे अर्थ में कर्म ही भक्ति और पूजा है। कर्मो से ही परमात्मा प्रसन्न होते हैं। आज विचित्र स्थिति है कि आज का मनुष्य श्रेष्ठकर्म, पुण्य, धर्म, दान आदि नहीं करता है, मगर धर्म का फल लेना चाहता है। वह पाप व अधर्म करता है परन्तु उसके फल से बचना चाहता है। मुख से श्रीराम बोलता है, मन में रावण के भाव रखता है। कथनी कुछ है, कर्मो से ही मनुष्य जगत् में सुख-दुःख प्राप्त करता है। सर्वत्र कलह, विवाद, समस्याएँ, संघर्ष, अशान्ति, दुःख, चिन्ता आदि बढ़ रहे हैं। इसका स्पष्ट कारण है कि आज का मानवसमाज पतित कर्मो की ओर बढ़ रहा है। हम शान्ति चाहते हैं, मगर काम अशान्ति के कर रहे हैं। सुख चाहते हैं, परन्तु काम दुःख के करते हैं। नीरोग होना चाहते हैं, परन्तु खानपान, रहनसहन रोगी होने का रखते हैं। आदर्श रामायण के सोचते हैं, परन्तु सोच और कर्म महाभारत के हैं। व्यक्ति, सत्संग, कथा-प्रवचन और मन्दिर में रोता है, ''मैंने बड़े पाप किए, मैं बड़ा अधार्मिक हूँ, मुझ में अनेक दोष हैं।'' परन्तु वहाँ से उठते ही पाप, अधर्म तथा बुरे कर्म फिर करने लगता है और घर में जाकर माँ-बाप से लड़ता और उन्हें अपमानित करता है। इसी कारण मनुष्य में सुधार नहीं हो पा रहा है। जब तक हम अपने कर्मो को नहीं सुधारेंगे, तब तक सुख, शान्ति और जीवन के लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकेंगे। प्रेरक भाव सचेत कर रहे हैं-

जिस जीवन में जीवन ही नहीं,
वह जीवन भी क्या जीवन है?
जीवन तब जीवन बनता है,
जब जीवन का आधार मिले॥

जीवन का आधार सुविचार हैं। सार्थक उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने और सच्ची सुख-शानित, प्रसन्नता, आनन्द आदि प्राप्त करने के लिए हमें अपने दृष्टिकोण को बदलना होगा। दृष्टि के बदलते ही सृष्टि बदलने लगती है। सोच के बदलते ही दशा और दिशा बदलने लगती है। संसारी मानव बाहर से सब कुछ तेजी से बदल रहे हैं। आज खाना-पीना, कपड़े, गहने, घर-सामान, रिश्तेनाते आदि सब कुछ बड़ी तेजी से छोड़े जा रहे हैं। मगर हम अपने अन्दर को नहीं बदलेंगे, तब तक जीवन नहीं बदलेगा। स्वयं को बदलना, अपने बारे में सोचना, देखना, समझना जानना और सुधारना आध्यात्मिकता का आरम्भ है। अपने को सुधार लेना संसार का सबसे बड़ा कार्य है। जीवनधारा को भोगप्रवृत्ति से योगप्रवृत्ति की ओर ले चलना है। प्रेय से श्रेय की ओर तथा भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर बढ़ना आदर्श जीवनदर्शन है। योगपद्धति में व्यक्ति शान्त, स्वस्थ, सुखी, प्रसन्न, सन्तुष्ट तथा प्रभु के नजदीक रहता है। जीवन की पूर्णता परमात्मा के सान्निध्य से आती है। बिना परमेश्वर के जीवन अपूर्ण और अनाथ है। ज्ञानी व्यक्ति प्रतिपल मृत्यु तथा परमात्मा को देखता है,

www.thearyasamaj.org

Contd. from Last Issuse

Eradication of Superstitions

GHOSTS

—Madan Raheja

- He is knowledgeable, capable of guiding and unfolding the mysteries of this Universe.
- Studies of the Vedic Literatures, of the society and of his own self is his usual habit.
- He is fearless in speaking the truth.
- Abuses, insults & ill-repute etc. do not affect his routine workings.
- He is a well-wisher of all and does not speak ill of others. He is impartial.
- He is free from Just, anger, greed, attachment, infatuation, egoism, jealousy, malice and vanity.
- His character is spotless. And
- Above all, he himself is self-evident and self-confident.

It is not only difficult but also almost impossible to get so many qualities in one man; after all a 'guru' is also a human being. Hence, selection of 'guru' is very important for the disciple. He has to make some compromises and arrive at a best combination of guru`s positive qualities. After all exercises, the selected guru should be examined for his following shortcoming or negative qualities.

- He should not be hypocrite.
- He should not equate himself with the creator of this Universe and try to get himself worshipped.
- He should not pose himself as a person acomplished with supernatural powers by finenesses of hands like a magician.
- He should not mislead people by voodooism.
- He should not be after physical comforts & money. He shouldn`t fix the amount of his guru-Dakshina-honorarium.
- He should not be the one practicing giving of secret 'Mantra', telling them not to disclose that 'Mantra' to anyone else and then frightening them if they do so they may be ruined. Please note that 'Mantras' are Vedic hymns, which are available to whole of manking for its good (in the form of subjects for deliberation).
- He should not pretend that he could take care of your problems by performing particular type of pooja.

In short it can be said that the process of searching a real 'guru' or worthy preceptor looks very complicated but it is very simple. Adopt a 'guru' with a thorough assessment and using your common sense.

Now we come to the point-how do the 'guru' help others? He apprises the pupil what is truth and what is not. He presents the right interpretation of 'Dharma' with authority to his disciple. 'Dharma' can be defined as knowing, spaking & practicing truth and it is an art of human being. Accepting this statement by the common man is not as easy as written above. It is being explained thoroughly. He analyzes the causes of his student going astray, when that happens. Guru has to channelize the pupul`s energy for his good. He motivates and inspires his disciples to move on the right track and open up avenues for upliftment of the soul. The 'guru' always acts as a guide, whenever the disciples falter; he shows the way to get over the life & death cycle i.e. to achieve Salvation.

We have talked about one main 'guru' But man has many gurus and his life. In start, we had mentioned the Supreme Guru-the God. Out wordily, mother is the first 'guru' or the teacher. She shapes the life of a man, right from when he is an infant and remains the well wisher of her child throughout even at the cast of innumerable hardships. Father is the second 'guru' who is responsible for his upbringing, provides him patronage and makes him rich in worldly wisdom from his experience.

In addition to the four 'gurus' referred above-the Almighty God (Guru of all ancient gurus), the mother, the father and the adopted one, man comes across many short-term gurus in his life. Today, though the 'Gurukul' (Hostel-cum-School where students reside in guidance with their gurus) tradition still operate, but majorities of the parents send their children to convent school and colleges run on today`s pattern. Here the child does not have an option to choose his teachers. He must learn maximum from these teachers in different subjects of physical sciences and acquire the materialistic knowledge. In the process of his learning, man meets many schoolars, experienced and aged people. He should make every possible effort, from all available sources, to gain knowledge for his overall improvement.

(To be Continued)

www.thearyasamaj.org

दालचीनी-शहद खाएँ, सेहत बनाएँ

आर्थराइटिस का दर्द हो या बालों के टूटने, झड़ने की समस्या। भारत में सदियों से दालचीनी और शहद के मिश्रण का इस्तेमाल होता चला आ रहा है। हकीम और वैद्य तो इसे लाख दवाओं की एक दवा बताते हैं।

खास बात यह है कि इसका कोई साइड इफेक्ट नहीं होता। यानी आप ऐलोपैथिक दवाओं के साथ भी इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। और क्या हैं इस जादुई मिश्रण के फायदे और कब कर सकते हैं इसका इस्तेमाल, डालते हैं एक नज़र–

1. **दूर करें आर्थराइटिस का दर्द–** आर्थराइटिस का दर्द दूर भगाने में शहद और दालचीनी का मिश्रण बड़ा कारगर है। एक चम्मच दालचीनी पाउडर लें। इसे दो तिहाई पानी और एक तिहाई शहद में मिला लें। इस लेप को दर्द वाली जगह पर लगायें। 15 मिनट में आपका दर्द फुर्र हो जायेगा।

2. **रोकें बालों का झड़ना**–गंजेपन या बालों के गिरने की समस्या बेहद आम है। इससे छुटकारा पाने के लिए गरम जैतून के तेल में एक चम्मच शहद और एक चम्मच दालचीनी पाउडर का पेस्ट बनाएं। नहाने से पहले इस पेस्ट को सिर पर लगा लें। 15 मिनट बाद बाल गरम पानी से घोल लें।

3. **दाँत दर्द में पहुँचाएँ राहत**–एक चम्मच दालचीनी पाउडर और पाँच चम्मच शहद मिलाकर बनाये गये पेस्ट को दाँत के दर्द वाली जगह पर लगाने से फौरन राहत मिलती है।

4. **घटाता है कोलेस्ट्राल**–करीब आधा लीटर चाय में तीन चम्मच शहद और तीन चम्मच दालचीनी मिलाकर पीएँ। दो घंटे के भीतर रक्त में कोलेस्ट्राल का स्तर 10 फीसदी तक घट जाता है।

5. **सर्दी जुकाम की करें छुट्टी**–सर्दी जुकाम हो तो एक चम्मच शहद में एक चौथाई चम्मच दालचीनी पाउडर मिलाकर दिन में तीन बार खाएं। पुराने कफ और सर्दी में भी राहत मिलेगी।

6. **बढ़ाएँ वीर्य की गुणवत्ता**–सदियों से यूनानी और आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में वीर्य की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शहद का इस्तेमाल होता रहा है। वैद्य पुरुषों को सोने से पहले दो चम्मच शहद खाने की सलाह देते हैं। ऐसी महिलाएं जो गर्भधारण नहीं कर पाती हैं, उन्हें एक चम्मच शहद में चुटकी भर दालचीनी पाउडर मिलाकर मसूढ़ों पर लगाने के लिए कहा जाता है।

7. **भगाए पेट का दर्द**–शहद के साथ दालचीनी पाउडर लेने पर पेट के दर्द से राहत मिलती है। ऐसे लोग जिन्हें गैस की समस्या है उन्हें शहद और दालचीनी पाउडर का बराबर मात्रा में मिलाकर सेवन करना चाहिए।

8. **मजबूत करें प्रतिरक्षा तंत्र**–रोजाना शहद और दालचीनी पाउडर का सेवन करने से प्रतिरक्षा तंत्र मज़बूत होता है और आप वाइरस या बैक्टीरिया के संक्रमण से भी बचे रहते हैं। वैज्ञानिकों ने पाया है कि शहद में कई तरह के विटामिंस और प्रचुर मात्रा में आयरन पाया जाता है, जो आपकी सेहत के लिए बेहद ज़रूरी है।

9. **बढ़ाये आयु**–पुराने समय में लोग लंबी आयु के लिए चाय में शहद और दालचीनी पाउडर मिलाकर पीते थे। इस तरह की चाय बनाने के लिए तीन कप पानी में चार चम्मच शहद और एक चम्मच दालचीनी पाउडर मिलाया जाता था। इसे रोजाना तीन बार आधा कप पीने की सलाह दी जाती थी। इस तरह से बनी चाय त्वचा को सॉफ्ट और फ्रेश रखने में मदद करती है।

10. **घटाए वज़न**–खाली पेट रोज़ाना सुबह एक कप गरम पानी में शहद और दालचीनी पाउडर मिलाकर पीने से फैट कम होता है। यदि इसका सेवन रोज़ाना किया जाये तो मोटे से मोटे व्यक्ति का वज़न भी घटना शुरू हो जाता है।

ऐसे भगाएं सिरदर्द

आधुनिक जीवनशैली के चलते सिरदर्द की समस्या आम हो गई है। इसका सेहत और काम पर बुरा असर पड़ता है। कुछ घरेलू नुस्खे अपनाकर सिरदर्द दूर किया जा सकता है।

- ब्लैक टी में नींबू निचोड़ कर पीने से सिरदर्द में आराम मिलता है।
- धूप की वजह से होने वाले सिरदर्द में नींबू के ऊपरी छिलके को पीसकर माथे पर लगाएं।
- गर्म सूप पीएं। तनाव से भी सिरदर्द होता ह। तनाव से बचने की कोशिश करें।
- धूम्रपान और एल्कोहल से दूर रहें। अक्सर डीहाइड्रेशन से भी सिरदर्द की समस्या आती है। अधिक मात्रा में पानी पीकर इस पर काबू पाया जा सकता है। चाय और कॉफी का ज्यादा सेवन न करें। इसमें कैफीन पाया जाता है। ज्यादा कैफीन से सिरदर्द की आशंका बढ़ा जाती है।
- रात में कम से कम छह से आठ घंटे की नींद लें। सोने और जागने का समय तय रखें।
- सिरदर्द होने पर एक चम्मच अजवयन को भूनकर साफ सूती कपड़े में बाध लें। इसे सूंघ कर गहरी सांस लें। इइस प्रक्रिया को कई बार दोहराएं।
- पाचन क्रिया ठीक न होने, कब्ज, आंखों का कमजोर होना, हाई ब्लड प्रेशर जैसे कारणों से भी सिरदर्द होता है। ऐसे में डॉक्टर की सलाह लेना न भूलें।

www.thearyasamaj.org

प्रभु जो करते हैं, अच्छा ही करते हैं

- महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

एक राजा अपने मंत्री के साथ पर्यटन तथा शिकार के लिए जंगल में निकल गया। चलते-चलते काँटों वाली झाड़ी में राजा का वस्त्र उलझ गया। हाथ से वस्त्र को बचाने का यत्न किया, तो उँगली में बड़ा घाव आ गया। रक्त बहने लगा--वज़ीर ने पट्टी बाँधते हुए कहा-'कोई बात नहीं, प्रभु जो करते हैं, अच्छा ही करते हैं।'

यह बात सुनकर राजा को क्रोध आ गया--अरे! मेरी तो उँगली कट गई, इतना रक्त बह गया, पीड़ा तंग कर रही है और यह कैसा मंत्री है जो कह रहा है कि प्रभु जो करता है, अच्छा करता है? मैं तो ऐसे मंत्री के बिना ही अच्छा हूँ।

'मंत्री, आप कृपया जाइये। मैं ऐसे साथ से अकेला ही अच्छा।' मंत्री ने उत्तर में कहा, 'जो आज्ञा आपकी, मैं अपना रास्ता लेता हूँ।'

राजा अकेला ही चल पड़ा। चलते-चलते दूसरे राजा के राज्य में जा पहुँचा। वहाँ उस दिन देवी पर मनुष्यों की बलि चढ़ाई जाने वाली थी। सिपाही किसी पुरुष की तलाश में थे। खोजते-खोजते सिपाहियों की दृष्टि राजा पर पड़ी--सुन्दर है, शरीर अच्छा है, देवी इसकी बलि से बहुत प्रसन्न होगी। राजा को सिपाही मंदिर में ले गये।

बलि चढ़ाने से पूर्व जब राजा को स्नान कराया जाने लगा, तो पुजारी की आँखों ने राजा की कटी उँगली को देखा और पुकार उठा, 'अरे! यह तो अंग-भंग है, इसकी बलि नहीं चढ़ाई जा सकती।'

राजा को छोड़ दिया गया। राजा अपनी नगरी की ओर आ रहा था। विचार भी कर रहा था कि मंत्री ने ठीक ही तो कहा था कि प्रभु जो करते हैं, हमारे कल्याण के लिए ही करते हैं। यदि हाथ पर घाव न आ गया तो आज यमदूत ले ही गये थे। इस घाव ने ही बचा लिया। ऐसे मंत्री का तो मान होना चाहिए, न कि उसे दंड मिलना चाहिए। नगरी में पहुँचने से पूर्व राजा मंत्री की खोज करने लगे। वहाँ एक नन्हीं सी कुटिया में मंत्री को बैठे देखा तो उसे अपने साथ लेकर राजा अपनी नगरी में जा पहुँचा।

राजा ने मंत्री से कहा--'आपने तो मेरी उँगली कटने पर बड़े पते की और मर्म की बात कही थी। मैं ही अल्पबुद्धि समझ न पाया। इसी घाव के कारण मैं मौत के मुँह से निकल आया हूँ, परन्तु मेरे अच्छे मंत्री! यह बताओ कि मेरे घायल होने में तो भला हुआ, परन्तु मैंने आप-जैसे तत्त्वदर्शी का जो अपमान किया और आपको निकाल दिया, इसमें प्रभु ने आपकी कौन-सी भलाई देखी?'

मंत्री ने मुस्कराते हुए कहा--'यह तो और भी अधिक अच्छा हुआ। यदि आप मुझे दुत्कार न देते तो मैं आपके साथ ही रहता। तब सिपाही मुझे भी पकड़कर ले जाते। आप तो घायल होने के कारण छूट जाते, परन्तु मैं तो अंग-भंग नहीं था। तब वह मेरी ही बलि चढ़ा देते। मेरे ऊपर तो प्रभु ने विशेष कृपा की कि ज़ख्मी भी न किया और मृत्यु का ग्रास बनने से भी बचा लिया, इसलिए यही कहना उचित है कि प्रभु जो करते हैं, हमारे कल्याण के लिए ही करते हैं। राजन्! हमारी दृष्टि छोटी है, प्रभु की आँखें बहुत दूर तक देखती हैं।'

तुम्हारी चाही में प्रभो, है मेरा कल्याण।
मेरी चाही मत करो, मैं मूरख नादान॥

'Gayatri Mantra'

'Gayatri Mantra' the most powerful hymn in the world Dr. Howard steingeril, an american scientist collected Mantras, Hymns and invocations from all over the world and tested their strength in his physiology laboratory.

Hindu`s Gayatri Mantra produced 110,000 sound waves/second. This was the highest and was found to be the most powerful hymn in the world. Through the combination of sound or sound waves of a particular frequency, this Mantra is claimed to be capable of developing specific spritual potentialities.

The Hamburg university initiated research into the efficacy of the Gayatri Mantra both on the mental and physical plane of creation.

'Om Bhoor Bhuwah Swah, Tat Savitur varenyam Bhargo Devasya Dheemahi Dhiyo yo Nah Prachodayaat!

It`s meaning

God is dear to me like my own breath, He is the dispeller of my pains and giver of happiness. I meditate on the supremely adorable light of the divine creation, that it may inspire my thought and understanding.

www.thearyasamaj.org

जलाओ दिए, पर रहे ध्यान इतना, अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाए

अग्नि पूजा भारत की अति प्राचीन परम्परा है। अग्निः अग्रणीर्भवति इति अर्थात् अग्नि की शिखा सदैव आगे ही आगे रहती है। यथार्थ में जीवन को आगे से आने ले चलने की प्रेरणा का प्रतीक अग्नि पूजन है।

वेदों में कहा गया है अग्निना अग्निः समिध्यते। अग्नि से अग्नि जागृत की जाती है, दीप से दीप जलता है। जागृत गुरु के दीप से अपने आत्मस्वरूप को ज्ञान दीप की भांति प्रज्वलित करना चाहिए। मान्यता है कि त्रेता युग में भगवान श्रीराम की रावण पर विजय के पश्चात् अवधपुरी में उनके लौट आने पर प्रकाशोत्सव प्रारम्भ हुआ। पुराणों में देवों पर विजय के शुभ अवसर पर स्वर्ग में देवराज इन्द्र के द्वारा दीपार्चन हुआ, धरती पर उसका अनुकरण दीपावली पर्व के रूप में किया गया।

लक्ष्मी समृद्धि की कामना हेतु दीपमाला सजाना तथा गणेश-लक्ष्मी पूजन करना इस अवसर की विशेष पारम्परिक पूजा है। हजारों वर्षों से हमारे ऋषि-मुनि हमें अपने अन्तःकरण में छायी अज्ञान की कालिमा को मिटाने के लिए तथा ज्ञान ज्योति ज्योतित करने के लिए प्रेरणा देते रहे हैं और प्रार्थनाएं करते रहे हैं।

उपनिषद् के ऋषि याजवल्क्य ने हजारों वर्ष पूर्व साधना की तपोभूमि में श्रद्धानत होकर प्रार्थना की थी।

उपनिषद् के ऋषि याज्ञवल्क्य ने हजारों वर्ष पूर्व साधना की तपोभूमि में श्रद्धानत होकर प्रार्थना की थी।

असतो मा सद् गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्माऽमृतं गमय।

हे प्रकाशपुंज परमात्मन्! हमें असत् से सत्य की ओर ले चलो। अंधेरों के भटकाव से ज्ञान के उजालों की ओर ले चलो। पीड़ा सन्त्रास से तड़पते हृदय को अमृत गामी बनाओ। प्रकाश की ओर चलना उजालों से जीवन को जागृत करना, ये हमारी कामनाएं रही हैं। ये हमारी अर्चना के स्वर सैदव रहें। अग्नि, दीप, और हवन आदि धार्मिक मान्यता पवित्रता, प्रकाश, ऊर्जा और जागरण आदि भावों के प्रेरक हैं। जल का प्रवाह सदैव समुद्र से मिलने के लिए उद्यत रहता है अतः वह सदा नीचे की ओर बहता है, अग्नि का लक्ष्य सूर्य की ओर ऊपर उठकर द्युलोक में विलीन होने का होता है, भक्त भी अपनी जीवन ज्योति को साधना से ऊपर उठाकर परम के ऊंचे धाम तक पहुंचाने की कामना करता है। यह व्यक्ति की आध्यात्मिक दीपावली है।

कर्मकाण्ड शास्त्र के अनुसार तो दीपार्चन विघ्नविनाशक भगवान गणेश के आशीर्वाद और समृद्धि दात्री महालक्ष्मी की कृपा पाने के लिए किया जाता है।

वस्तुतः दीपावली पर्व प्रकाश पुंज परमेश्वर को ज्ञान, श्रद्धा और भक्ति से आलोकित हृदय में आमंत्रित करने का महान पर्व है। घर को सजा कर पवित्र बनाकर प्रेम और एकता के दीप जलाकर समृद्ध करने का त्यौहार है। यह त्यौहार है जिससे हमारा मानवीय पक्ष मुखरित हो कि हम अंधेरे, अज्ञान, अन्याय, अभाव और आलस्य से घिरे मानव को सही राह दिखाने वाले बनें। इसलिए हमारा लक्ष्य बनें "आरोह तमसो ज्योतिः" अंधेरे से उजालों की ओर बढ़ते चलें। इसलिए मैं इन शब्दों के साथ अपने भी स्वर मिलाना चाहूंगा।

आओ! दिए पर रहे ध्यान इतना,
अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।
मगर दीप की दीप्ति से,
नहीं मिट सकेगा धरा का अंधेरा।
उतर क्यों न आएं, नक्षत्र सब गगन के।
नहीं मिट सकेगा, धरा का अंधेरा।
मिटेगी तभी यह अंधेरी घिरी,
जब मनुज स्वयं दीप रूप बन जाए।
जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना,
अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।

दीपावली का रूप पवित्रता, प्रेरणा, सामंजस्य का रहे तो अच्छा होगा। इस अवसर पर जुआ खेलना, आतिशबाजी करके वातावरण को विषाक्त करना तथा धन का अपव्यय करना, धमाके करके रोगी, वृद्धजनों एवं विद्यार्थी जनों को संतापित करना धार्मिक कृत्य नहीं है। हमारा उल्लास मर्यादित हो तथा प्रेम से भरपूर हो किसी की खुशी छीनने वाला नहीं होना चाहिए।

- जीवन संचेतना से साभार

आत्मशुद्धि आश्रम के मुख्यांधिष्ठाता
स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी
के 78वें जन्मोत्सव पर हार्दिक शुभकामनाएं

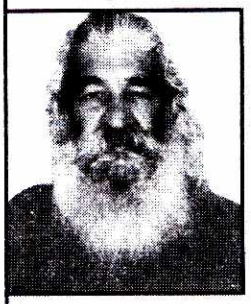

आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ के मुख्याधिष्ठाता, आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक) के प्रधान सम्पादक, सहृदय, समाजचेता, कर्मयोगी, धर्मनिष्ठ, सर्वप्रिय, परोपकारी, गऊ सेवक एवं जन-जन के हृदय सम्राट् स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी अपने जीवन के 77 वर्ष 20 नवम्बर 2013 को पूरे कर रहे हैं।

आपके 78 वें जन्मोत्सव के शुभावसर पर मैं अपनी ओर से, 'माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट (रजि.) दिल्ली तथा 'कमल ज्योति' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। परमपिता परमात्मा आपको उत्तम स्वास्थ्य के साथ दीर्घायु प्रदान करें।

जन्मदिवस पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

-भजन प्रकाश आर्य

www.thearyasamaj.org

क्या ईश्वर है?

महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

एक था पिता- कम्युनिष्ट विचारों का। ईश्वर है, ऐसा वह नहीं मानता था। उसका पुत्र पढ़ता था एक आर्यकॉलिज में उसके मन पर दूसरी छाप पड़ी थी। वह प्रातः सायं भजन के लिए बैठ जाता, ईश्वर का नाम लेता, उसे स्मरण करता। पिता इसको सदा कहता–"यह तुम क्यों समय नष्ट करते रहते हो? संसार में कोई ईश्वर नहीं। जिसका नाम तुम लेते फिरते हो, उसका कोई अस्तित्व नहीं।"

पुत्र उसे कहता–"यदि ईश्वर नहीं, तो फिर सृष्टि किसने रची है?"पिता कहता–"यह सब-कुछ गर्मी और सर्दी का परिणाम है। प्रत्येक वस्तु में उष्णता है, सर्दी है। पता नहीं, कब यह उष्णता बहुत बढ़ी। इसके कारण कहीं कुछ बन गया, कहीं कुछ। स्वयं ही यह सब-कुछ हो गया। इसे बनानेवाला कोई नहीं।"

पुत्र ने सोचा–अपने पिता को किस प्रकार समझाऊँ? कॉलिज में गया, तब भी यह विचार उसके मन में था। एक बड़ा-सा कागज़ लेकर सुन्दर रंगों के साथ वहाँ उसने एक चित्र बनाया। बनाकर घर में आया। उसे कमरे में रख दिया, जिसमें उसका पिता सोया रहता था।

पिता कार्यालय से लौटे तो चित्र को देखा। पुत्र से बोले–"यह चित्र किसने बनाया? यह तो बहुत सुन्दर बना है।"

पुत्र ने कहा–"किसी ने भी तो नहीं बनाया। अपने-आप ही बन गया है।" पिता ने आश्चर्य से कहा–"अपने-आप?"

पुत्र ने कहा–"हाँ पिताजी, कॉलिज में कागज़ के रिम पड़े थे। उनमें उष्णता और गति आई तो एक रिम से यह कागज़ उड़कर मेज़ पर आ गया। एक अल्मारी में रंग भी पड़े थे। उन्हें गर्मी जो लगी तो उनके अन्दर शक्ति आ गई। अल्मारी से निकलकर वे कागज़ पर गिर पड़े, उसके ऊपर फैल गए और यह चित्र बन गया।"

पिता ने क्रोध के साथ कहा–"मुझसे उपहास करता है, मूर्ख! स्वयं यह बात कैसे हो सकती है?"

पुत्र ने कहा–"वैसे ही पिता जी, जैसे स्वयं यह सृष्टि बन गई। यदि गर्मी की शक्ति से स्वयमेव इतनी बड़ी सृष्टि बन सकती है तो क्या यह छोटा-सा चित्र नहीं बन सकता?"

उसके पिता को समझ आई। इस शरीर में जिस प्रकार आत्मा प्रत्येक कार्य को चलाता हुआ शरीर का स्वामी बनके बैठा है, वैसे ही इस संसार में, सारे संसार को चलाता हुआ ईश्वर संसार का स्वामी बनके प्रत्येक वस्तु के अन्दर विद्यमान है। इन्द्रियों के पर्दे को हटाकर जिस प्रकार आत्मा के दर्शन होते हैं, इसी प्रकार प्रकृति के पर्दे को हटाकर ईश्वर का दर्शन होता है।

सेवा का संकल्प

सुधांशु जी महाराज

जो अपने मान को मारकर सेवा में लग गए हों वही तो सच्चे सेवक होते हैं। हनुमान जी सेवा मांगते नहीं, सेवा पूछते नहीं वह नहीं कहते कि जरा बताइए क्या सेवा पूछते नहीं। वह नहीं कहते कि जरा बताइए क्या सेवा करूं। मौका ढूंढते हैं कि सेवा का कोई काम सामने दिखाई देता हो तो सबसे पहले आगे बढ़कर उसे करने लगते हैं और इसतरह रामजी को प्रसन्न करने में लगे रहते हैं। रामजी प्रसन्न होकर हनुमान से कहते हैं कि तुम मम प्रिय भरत सम भाई, तुम मुझे भरत जैसे प्यारे भाई हो।

सेवक हनुमान भाई जैसे शब्द को पा गया। रामजी को उन्हें भाई कहना पड़ा।

विचार करके देखिए, अगर हम लोग सेवा का संकल्प कर लें तो वह सेवा परमात्मा तक लेकर जाती है। सेवक को भोला होना चाहिएए कुटिल नहीं और सेवक को मुंह बंद रखकर काम करते रहना चाहिए। हनुमान जी बोलते नहीं हैं, सरल हैं, भोले हैं। सेवक को किसी भी प्रकार के पदार्थ का आकर्षण मन में नहीं रखना चाहिए। जानकी जी ने कीमती हार दिया था। हनुमान जी ने यह कहते हुए दांतों से चबा-चबाकर तोड़कर फैंक दिया कि दुनिया में रामजी के नाम से बढ़कर कीमती क्या है हमारे लिए? हमें तो राम चाहिए। कितना भोलापन, जबकि हनुमान जी के लिए कहा गया है ज्ञानिनां अग्रगण्यम्, ज्ञानियों के भी ज्ञानी हैं, लेकिन फिर भी कितने भोले हैं। जानकी माता से पूछते हैं कि आप यह सिंदूर किसलिए लगा रही हैं? सीता मां क्या समझाएं? उन्होंने सीधे ढंग से कह दिया कि अपने स्वामी को प्रसन्न करने के लिए लगाती हूं। रामजी को प्रसन्न करने के लिए सिंदूर लगाती हैं। सिंदूर लगाने से रामजी खुश होते हैं, ऐसा सोचकर हनुमान जी गए और पूरे शरीर पर सिंदूर लगाकर आ गए।

बोले-मां! आपसे तो रामजी थोड़े प्रसन्न होंगे, मेरे ऊपर ज्यादा प्रसन्न होंगे। मैंने तो ज्यादा सिंदूर लगा लिया है सारे शरीर पर। हमारे मंदिरों में जहां हनुमान जी की मूर्ति है, उनका यह रूप भी प्रदर्शित किया जाता है, जिसमें वक्ष चीरकर, छाती चीरकर हनुमानजी रामजी और सीताजी का रूप दिखा रहे हैं। यह रूप भी जिसमें संजीवनी बूटी लेकर पहाड़ हाथ में उठाए लेकर जा रहे हैं। यह सब कुछ प्रदर्शित किया जाता है, लेकिन हर मंदिर के अंदर सिंदूर वाले हनुमान जरूर स्थापित किए जाते हैं। भक्त लोग यह कहते हैं कि हनुमान राम को रिझाने के लिए जिस रंग में रंगे थे वही रंग हमारे माथे पर भी लगा दो। हम भी राम के रंग में रंग जाएं। हमें भी वह भक्ति मिल जाए। इसलिए सब कोई हनुमान के चरणों में लगे हुए। सिंदूर को अपने माथे पर लगाता है, क्योंकि ऐसा ही भोलापन, ऐसी सरलता लेकर जो भक्ति करता है, सेवा करता है वहीं तो परमात्मा का प्यार पाता है। इसलिए यह रंग लगाओ अपने अंदर जो सेवा का रंग है।

शरीर का तप यही है कि अपने बड़ों का, अपने पूज्यजनों का पूजन करो। सेवा के माध्यम से उन्हें प्रसन्न करो। सेवा से पाया जा सकता है परमात्मा को।

www.thearyasamaj.org

ऋषि ऋण संसार उतार नहीं पाएगा!

- आचार्य वेदभूषण

वैसे तो संसार में हजारों सम्प्रदाय, मत व पन्थ हैं पर उन्नीसवीं शताब्दी के बाद हर मत सम्प्रदाय की विचारधारा पर महर्षि दयानन्द के विचारों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। जैसे कोई शक्तिशाली पुरुष लोहे की मोटी छड़ को मोड़ देता है वैसे ही महर्षि ने अपने प्रभाव से संसार के विचार रूपी प्रवाह के नद को मोड़ दिया। मोटी बुद्धि के साधारण लोग इस यथार्थ को देख नहीं पाते पर हर सूक्ष्मदर्शी इस सत्य को सर्वत्र सूर्य के प्रकाश के समान देख सकता है।

महर्षि दयानन्द जब स्वामी विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त कर हरिद्वार के कुंभ के मेले में पहुंचे और पाखण्ड खडनी पताका लहराई, उससे पहले की धार्मिक मान्यताओं और अस्थाओं में और महर्षि के उत्तरवर्ती काल की मान्यताओं और आस्थाओं की व्याख्या में एक अंतर स्पष्ट देखा जा सकता है। फिर चाहे वे व्याख्यायें कुरआन की हों या बाइबिल की हो चाहे पुराण की हों।

विश्व व्यापी पाखण्ड, अज्ञान, अंधविश्वास के अंधकार पर इतना गहरा और शक्तिशाली आक्रमण महर्षि दयानन्द से पूर्व कोई कर नहीं पाया था। अंधकार को न मानना या अन्धविश्वास का प्रतिरोध करना या किसी पर कीचड़ उछाल देना, एक साधारण बात है। पर झूठ के स्थान पर सत्य को, अन्धकार के स्थान पर प्रकाश को, अन्धविश्वास के स्थान पर सत्य श्रद्धा को स्थापित करना, अपने आप में एक सशक्त सुदढ़ और यथार्थ को उजागर करना एक असाधारण बात है। किसी की मान्यता को नकार देने का कार्य तो एक अज्ञान अबोध शिशु भी कर सकता है। किन्तु किसी झूठ को नकार कर सत्य को स्थापित कर देना यह कठिनतम कार्य होता है।

जैसे बादलों में कभी-कभी सूर्य छिप जाता है वैसे ईश्वरीय ज्ञान वेद की स्थिति हो गई थी। सायण और महीधर के वेदीभाष्यों को अपनी भाषा में अनूदित कर-जब विश्व के प्रसिद्ध ज्ञानी-विज्ञानियों ने मानने का यत्न किया तो उन्होंने अनुभव किया कि-वेद की बातें अशिक्षित, अनपढ़ लोगों के असभ्य लोगों के गीत मात्र हैं।

महर्षि दयानन्द ने जो सत्य और यथार्थ का प्रकाश किया उसके परिणामस्वरूप आज बाइबिल, कुर्आन और पुराण की व्याख्याएं बदल गई हैं। जिन मान्यताओं को पहले सत्य स्वीकारा जाता था आज उन्हें आलकारिक वर्णन मात्र माना जाने लगा है।

भारतीय आकाश में चमकरने वाले वेदीप्यमान नक्षत्रों में जैसे राम और कृष्ण सारे विश्व में जाने और माने जाते हे, वैसे ही महर्षि का तप और उन द्वारा किया गया सत्य का प्रकाश कभी समूचे विश्व को आलोकित कर देगां यह सुनिश्चित है।

महर्षि द्वारा प्रतिपादित एक भी वैदिक सिद्धान्त ऐसा नहीं है जिस पर कोई लकीर खींच दे। क्योंकि अन्धकार को चीरने का सामर्थ्य प्रकाश में ही होता है: पर प्रकाश को आंचल में समेटे जब एक चिंगारी उठती है तो उस कण मात्र सी चिंगारी को समस्त विश्व का अन्धकार मिलकर भी उसे परास्त नहीं कर सकता। जैसे अग्नि का हर कण तेज पुंज सूर्य से बंधा होता है वैसे ही महर्षि का ज्ञान व सत्य का प्रकाश ध्रूव सत्य ज्ञान वेद से आवेष्टित है। इसीलिए अनेक धर्मान्ध अन्धविश्वासी जो महर्षि के सिद्धान्तों और मान्यताओं को काटने के उद्देश्य से उठते हें, वे कालान्तर में महर्षि के अनुयायी बन कर रहे जाते हैं।

महर्षि स्वामी दयानन्द का जो आत्मस्वरूप है वह अत्यन्त भास्वर है। इसे हम शुक्ल पक्ष कह सकते हैं। पर महर्षि दयानन्द ने व्यवहार और जीवन में, कथनी और करनी में एक रूपता का अभाव विश्व को प्रभावित व अनुप्राणित करने में अक्षम हो चला है। काश हम आर्य लोग जीवन में छल-कपट रहित हो कर सत्य व्यवहार, सत्य आचरण और पश्पात रहित न्यायचरण का संकल्प में सार्वभीम नागरिक के स्वरूप को अंगीकार करें तो वह दिन दूर नहीं जब हम धरती को फिर से वेदों के प्रकाश से जगमगा दें। आपसी फूट, राग और द्वेष तथा छल-छद्मयुक्त व्यवहार हमें चार-चार आंसू बहाने के लिए विवश कर रहा है।

यदि हम कुर्सियों और अधिकार की पारस्परिक लड़ाई से पृथक एकान्त भाव से सन्मार्ग पर चलें और सतप्रेरणा का व्रत धारण करें तो हम उस महर्षि के चरणों में अपनी छोटी-सी तुच्छ श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं। गम्भीरता से निष्पक्ष भाव से शुद्ध अन्त:करण से विचार करें तो ज्ञात होगा कि प्यारे ऋषि दयानन्द के ऋण हम पर और सारे संसार पर इतने अधिक है कि हम जन्म-जन्मानतर तक उनसे उऋण हो नहीं सकते।

पाठकों से निवेदन

यदि आपका 'कमल ज्योति' हेतु शुल्क अभी तक जमा नहीं हुआ है या समाप्त हो गया है तो कृपया अपना शुल्क आजीवन 1100/- रुपये की दर से 'कमल ज्योति' के नाम मनिआर्डर/क्रास चैक से कार्यालय, डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034 के पते पर शीध्र भेजें ताकि पत्रिका आपको लगातार मिलती रहे। अपना नाम, निवास का पूरा पता, कोड नम्बर, फ़ोन तथा मोबाईल नम्बर आदि सुन्दर व साफ़ शब्दों में लिखने का कष्ट करें। धन्यवाद!

-प्रबन्धक

www.thearyasamaj.org

श्री गुरु नानक देव जी

श्री गुरु नानक देव जी का जन्म, गांव राय भोयं की तलवंडी, जिला शेखपुरा (पाकिस्तान) में, 15 अप्रैल सन् 1469 को हुआ। इस स्थान को आजकल ननकाणा साहिब कहा जाता है। आपके पिता जी का नाम मैहता कालू दास था, जो मैहता कालू के नाम से प्रसिद्ध थे। माता जी का नाम तृप्ता जी था। आपकी बड़ी बहन बेबे नानकी जी थी, जो आयु में आपसे पांच साल बड़ी थी। बाल्यावस्था में जब आपको पढ़ने के लिए स्कूल भेजा गया तो आपकी तीव्र बुद्धि को देखकर शिक्षक हैरान हो गए। दस साल की उम्र में जब आपको जनेऊ पहनाने लगे तो आपने जनेऊ का खंडन करके पहनने से इनकार कर दिया। 12 वर्ष की आयु में गुरु नानक देव जी भैंसो के चरवाहा बने। 16 वर्ष की आयु में आपका विवाह बटाला निवासी श्री मूल चन्द जी की सुपुत्री सुलक्षणी जी के साथ हुआ। उनके उदर से बाबा श्री चंद जी व बाबा लक्ष्मी चंद जी का जन्म हुआ।

सन् 1504 में आप अपने जीजा जी, भाई जै राम के पास, सुलतान पुर चले गए। वहां आप नवाब दौलत खां के मोदी बने। यहीं मैल सीहा का भाई भागीरथ, आपका सिख बना। उसी की ओर से भाई मनसुख भी सिख बने। सितम्बर 1507 में आपने वेई नदी में डुबकी लगाई व नारा लगाया: 'ना कोई हिन्दू ना कोई मुसलमान'। जब आप काजी व नवाब के साथ नमाज़ पढ़ने के लिए गए तो वहां आपने नमाज़ तो क्या पढ़ना थी, उनके दिल पढ़ लिए।

अक्तूबर 1507 में आप अपना परिवार अपने ससुर बाबा मूल चन्द के सुपूर्द करके, भाई मदीना को साथ लेकर अपनी पहली उदासी (प्रचारक दौरा) हिन्दू तीर्थों को दिशा से शुरु की। इस तरह दो अन्य प्रचारक दौरों द्वारा लगभग 12 साल आपने सिख धर्म का प्रचार किया। लोगों को कर्म-कांड से निकाल कर एक अकाल पुरख का सुमिरन (स्मरण) करने की प्रेरणा दी। परिश्रम करके कमाई करनी सेवा करनी (दीन-दुखी की सहायता) मिल बांट कर खाना आपके सुनहरी उपदेश है। सन् 1532 में बाबा लहणा जो आपको करतारपुर में मिले। आप ने उनकी कई परीक्षाएँ लीं व उपयुक्त पाये जाने पर सितम्बर 1532 में उन्हें गुरु-गद्दी सौंप दी। भाई लैहणा जो को गुरु अंगद साहिब बना कर आप स्वयं प्रलोक गमन कर गए।

जन्म दिवस पर बधाई

आर्यसमाज की प्राण, जन-जन की प्रेरणा स्त्रोत धर्म निष्ठा, परोपकारिणी, उदारमना, दानी एवं नि:स्वार्थ समाज सेविका माता सुशीला सेठी जी को उनके जन्मदिवस 1 नवम्बर 2013 के शुभ अवसर पर 'कमल ज्योति' परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। परम पिता परमात्मा आपको उत्तम स्वास्थ्य के साथ दीर्घायु प्रदान करें।

धर्म, संस्कृति एवं स्वास्थ्य की मासिक पत्रिका

कमल ज्योति

डी-796, सरस्वती विहार,
दिल्ली-110034

अपने जीवन की शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक उन्नति के लिए 'कमल ज्योति' पत्रिका अवश्य पढ़े और इष्ट मित्रों को भी पढ़ाएं। सदस्य बनें और बनाएं।

माता कमला आर्या धर्मार्थ ट्रस्ट के
सहयोग से
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
द्वारा प्रकाशित

वैदिक विनय

मात्र 125/- रूपये

प्राप्ति हेतु संपर्क करें।
-: प्राप्ति स्थान :-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली

www.thearyasamaj.org

RNI No.DEL BIL/2008/25452 Total Pages 12 ओ३म् Posting Date 5 or 6 November 2013 DL (N)0225/2012-14

प्रेषक Date of Publication: 25 October 2013

कमल ज्योति

नवम्बर 2013(मासिक) एक प्रति का मूल्य 10 रुपये

डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034,

फोन : 27017780

सेवा में

आर्य समाज वेद मन्दिर, सी.पी. ब्लॉक, पीतमपुरा, दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज वेद मन्दिर सी.पी. ब्लॉक, पीतमपुरा दिल्ली का वार्षिकोत्सव 25 सितम्बर से 29 सितम्बर 2013 तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, सामवेद महायज्ञ (उत्तराचिक), आचार्य विद्याभानु जी शास्त्री के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। श्री कुलदीप आर्य जी के मधुर भजन व आचार्य विद्याभानु जी द्वारा वेद प्रवचन हुए। आर्य महिला सम्मेलन 26 सितम्बर को सम्पन्न हुआ, जिसमें श्रीमती रचना आहुचा, प्रधाना, उत्तरी दिल्ली आर्य महिला वेद प्रचार मण्डल द्वारा वैदिक विचार दर्शन प्रस्तुत किये गये। समापन समारोह रविवार 29 सितम्बर को मनाया गया। श्री सुरेन्द्र आर्य प्रधान, वेद प्रचार मण्डल उत्तरी पश्चिमी दिल्ली के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री धर्मपाल आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा की गई। डॉ. शिवकुमार शास्त्री, वैद्य गुरुदत्त शर्मा, श्री धर्मेन्द्र शास्त्री तथा आचार्य विद्याभानु शास्त्री जी द्वारा प्रवचन व आर्शीवचन सुनने को मिले, आस पास की आर्यसमाजो के अतिरिक्त श्री राममन्दिर, सी.पी. ब्लॉक, पीतमपुरा की कार्यकारिणी के सदस्यों ने

उपस्थित होकर उत्सव की शोभा को बढ़ाया। प्रधान श्री ब्रतपाल भगत ने सभी उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद किया। ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का सफल संचालन मन्त्री श्री सोहन लाल आर्य जी द्वारा किया गया।

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर, राजा पार्क चौक, शकूरबस्ती, दिल्ली में वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में गायत्री महायज्ञ का आयोजन दिनांक 25 अक्टूबर से रविवार 27 अक्टूबर तक आचार्य सत्यवीर जी के ब्रह्मत्व में तथा श्री वरूण देव जी के मनमोहक भजनों के साथ सम्पन्न हुआ। ब्र. राजसिंह, प्रधान, श्री विनय आर्य मन्त्री, श्री धर्मपाल आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा मुख्य अतिथि श्री राजीव आर्य, मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

आर्य समाज संदेश विहार, दिल्ली-34 का 22वां वार्षिकोत्सव दिनांक 24 अक्टूबर से 27 अक्टूबर 2013 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें वृहद यज्ञ एवं आध्यात्मिक प्रवचन पूज्य स्वामी सम्पूर्णानन्द नन्द जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ।

गायत्री एवं महामृत्युञ्जय महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज सरस्वती विहार दिल्ली-34 में गायत्री महायज्ञ एवं महामृत्युञ्जय महायज्ञ का आयोजन दिनांक 18 से 20 अक्टूबर तक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। उपाचार्य श्री अशोक कुमार शास्त्री थे। इसमें श्री महाशय धर्मपाल जी एम.डी.एच. वाले (प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा), श्री विनय आर्य (महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि), श्री सुरेन्द्र आर्य, श्री जोगेन्द्र खट्टर, श्री सन्तराम सचदेवा, श्री श्याम लाल गर्ग (विधायक), श्रीमती ज्योति नितिन अग्रवाल (निगम पार्षद), पूज्या माता प्रेमलता शास्त्री जी, श्री अनिल जिन्दल, श्री रत्न लाल गर्ग व श्री रणवीर सिंह डबास उपस्थित थे। यज्ञ व्यवस्था श्रीमती हर्ष आर्या एवं श्री अमित आर्य जी द्वारा की गई। ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का सफल संचालन आचार्य चन्द्रशेखर जी शास्त्री द्वारा किया गया।

स्वामी-माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट (रजि.) के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक एल.आर. आहूजा, चलभाष : 9810454677 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करौलबाग, नई दिल्ली-5, दूरभाष : 41548504 मो. 9810580474 से मुद्रित। कार्यालय : डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034 से प्रकाशित